

शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अध्ययन पुस्तिका

क्षमा और मेल-मिलाप

अध्याय 1: क्षमा के आधार

परिचय

यह अध्याय क्षमा और मेल-मिलाप नामक शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। हमारे जीवन में परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करना और दूसरों को क्षमा करना कठिन हो सकता है। दूसरों को क्षमा करना हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति के विरुद्ध है। लेकिन जब हम परमेश्वर को हमारे दिलों और मनो को बदलने की अनुमति देते हैं तो हम परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप का अनुभव कर सकते हैं। यह मॉड्यूल क्षमा के धर्मशास्त्रीय आधारों, मेल-मिलाप के लिए जरूरी प्रक्रिया, और एक-दूसरे के साथ मेल-जोल में रहने को बढ़ावा देने के तरीके की खोज करता है। यह क्षमा को भी जाँचता है क्योंकि व्यक्तियों या एक समुदाय के सदस्यों के बीच इसकी जरूरत हो सकती है।

इस अध्ययन पुस्तिका का लक्ष्य यह है कि एक व्यक्ति स्वयं किसी विशिष्ट अध्याय को गहराई से देखे। इन अध्यायों का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध वीडियो एवं ऑडियो उत्पादनों जैसी शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing



क्षमा और मेल-मिलाप

अध्याय 1: क्षमा के आधार

यह क्या है?

यह अध्याय बाइबल में सिखाई गई क्षमा को सिखाता है। इसमें परमेश्वर द्वारा हमें क्षमा करना, उसकी आज्ञा कि हम एक-दूसरे को क्षमा करें, और इसके कारण शामिल हैं कि क्षमा की क्या जरूरत है।

आपकी जानकारी के लिए...

जब कोई हमें चोट पहुँचाता है तो क्षमा करना असंभव लगता है। जब किसी घटना या टूटे रिश्ते का दर्द दूर नहीं होता है तो ऐसा लगता है कि हमें बार-बार चोट पहुँच रही है। फिर भी यीशु ने क्षमा करने के बारे में बहुत कुछ सिखाया है। यह अध्याय आसान नहीं है। क्षमा के बारे में पढ़ते समय परमेश्वर आपको किसी ऐसे व्यक्ति की याद दिला सकता है जिसे आपको क्षमा करने की जरूरत है या जिससे आपको क्षमा माँगने की जरूरत है! यदि आप कठिन समयों से गुजरे हैं और आपको अभी वास्तव में उन लोगों को क्षमा करना है जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई है तो परमेश्वर के वचन में आप जो पढ़ते हैं उसका पूरी तरह से जवाब देने के लिए आपको कुछ समय की जरूरत पड़ सकती है। शुरू करने से पहले प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको यह जानकारी दे कि आप कैसे क्षमा के साथ जवाब दें और कैसे क्षमा किए जाने का आभार प्रकट करें।

शुरुआत करना

1.

क्या आपकी क्षमा करने की इच्छा की सीमाएँ हैं? किसी व्यक्ति के किस कार्य को क्षमा करना आपके लिए असंभव हो सकता है?

2.

क्या परमेश्वर ने आपके सारे पापों को माफ कर दिया है? आप कैसे जानते हैं कि परमेश्वर ने आपको माफ कर दिया है?



अध्ययन

- ❖ **क्षमा क्या है?** बाइबल को संक्षेप में अपनी सृष्टि के साथ परमेश्वर के संबंध की कहानी के रूप में बताया जा सकता है। पाप के कारण हमारे और परमेश्वर के बीच इस संबंध में दरार आ गई और वह टूट गया। पाप दूसरे व्यक्ति या परमेश्वर के विरुद्ध जान-बूझकर किए जाने वाले अपराध (गलत कार्य) हैं। वे केवल गलतियाँ या अनजाने में किए गए कार्य नहीं हैं और इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं है। पाप और टूटा हुआ संबंध आज संसार की सारी बुराई की जड़ है जिसे परमेश्वर क्षमा के द्वारा फिर से सुधारने की पेशकश करता है। यदि हमें दूसरों को क्षमा करना है तो हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि क्षमा क्या है।

- आप 'क्षमा' को कैसे परिभाषित करेंगे?

परमेश्वर के वचन के अनुसार कुछ विचार कि क्षमा क्या है:

- **क्षमा का अर्थ छोड़ना है:** क्षमा करने की सबसे सरल परिभाषा हमें चोट पहुँचाने के कारण किसी को चोट पहुँचाने के हमारे अधिकार को छोड़ना है। हम बदला लेने के अपने दावे को छोड़ते हैं और फिर उनके विरुद्ध कोई बैर मन में नहीं रखते। हालांकि उनके पाप का फल उन्हें भुगतना पड़ सकता है लेकिन हम हमारे प्रति नैतिक कर्ज से मुक्त करते हुए चोट पहुँचाने वाले पक्ष को मुक्त कर देते हैं।
- **क्षमा सुधार को शुरू करती है:** जब किसी के साथ हमारा एक अच्छा संबंध होता है जो बाद में किसी अपराध के कारण टूट जाए तो उस संबंध को फिर से बहाल करने के लिए क्षमा की जरूरत पड़ती है। यह किसी टूटी हुई वस्तु की मरम्मत कर उसे नया बनाने के समान है। यह किसी का हमारे साथ फिर से दोस्ती में स्वागत करना है।
- **क्षमा और मेल-मिलाप एक जैसे नहीं हैं:** आप किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा कर सकते हैं जिसने आप से क्षमा नहीं माँगी है और वह शायद अब आपके जीवन में भी नहीं होगा जबकि एक टूटे रिश्ते को फिर से जोड़ने के लिए दो लोगों का आपस में सहमत होना जरूरी है। क्षमा उस दिशा में पहला कदम है।
- **क्षमा के लिए एक बदलाव जरूरी है:** जब हम किसी को क्षमा करते हैं तो उसके लिए केवल क्षमा के शब्दों, 'मैं तुम्हें माफ करता हूँ,' कि बजाय हमारे व्यवहार में एक बदलाव की जरूरत पड़ती है।

लूका 6:27-28 पढ़ें। यीशु चार बातों के बारे में बताते हैं जिन्हें किसी व्यक्ति को वास्तव में क्षमा करते समय हमारे लिए करना जरूरी है। वे कौन-कौन सी हैं?



- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

यीशु हमें इन बातों के बारे में बतों हैं: प्रेम करना – जिसके लिए हमें सहायक कार्यों के द्वारा किसी दूसरे को खुद से पहले रखना है, भलाई करना – इसके लिए दया, सेवा और करुणा के कार्यों, स्राप की बजाय आशीष देने, चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति की बुराई की बजाय उसके बारे में अच्छी बातें कहने और दण्ड की बजाय उसकी भलाई की कामना करने और अन्ततः परमेश्वर से उन्हें क्षमा करने और रिश्ते को फिर से बहाल करने की प्रार्थना करने की जरूरत है।

- आपको चोट पहुँचाने वाले किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम दिखाने, उसकी भलाई करने, आशीष देने और उसके प्रार्थना करने के क्या तरीके हो सकते हैं?

--

मत्ती 5:38–48 पढ़ें। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

- हमें हानि पहुँचाने वालों की हानि करने के सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य तरीके कौन-कौन से हैं?

--

- हमें चोट पहुँचाने वालों और हमारे शत्रुओं के संबंध में यीशु अपने चेलों से व्यवहार में क्या बदलाव लाने के लिए कह रहे थे?

--

- क्या हमारे शत्रुओं को हमारी क्षमा की जरूरत है? क्या क्षमा करने के बाद भी वे हमारे शत्रु हैं?

--

- परमेश्वर का वचन दूसरों को क्षमा करने के बारे में जो कहता है उन सारी बातों पर विचार करें। निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और आप जो सीखते हैं उसे लिखें:

रोमियों 8:29	
--------------	--



2 कुरिन्थियों 3:18	
रोमियों 12:2	
कुलुस्सियों 3:9-10	

- ❖ **परमेश्वर द्वारा हमारी क्षमा:** परमेश्वर चाहता है कि उसकी सृष्टि का उसके साथ संबंध फिर से बहाल हो जाए और पाप के कारण सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच का टूटा हुआ रिश्ता फिर से जुड़ जाए। यह उसकी क्षमा के द्वारा होता है। जब हम परमेश्वर द्वारा हमें दी गई क्षमा को समझते हैं तो हम दूसरों को क्षमा करने में समर्थ बनते हैं।
 - **परमेश्वर की क्षमा की कीमत बहुत बड़ी है:** लहू बहाए बिना पापों की कोई क्षमा नहीं है। पुराने नियम के इतिहास के दौरान क्षमा केवल विशेष होमबलियों के द्वारा ही पाई जा सकती थी। फिर हमारे पाप के लिए बलिदान के रूप में अपना जीवन देने के लिए यीशु मसीह इस संसार में आए। क्षमा की कीमत बहुत बड़ी थी। (इब्रानियों 9:22-26)
 - **परमेश्वर की क्षमा की हम सबको जरूरत है:** हम में से एक भी व्यक्ति निष्पाप होने का दावा नहीं कर सकता है। हर एक जीवित व्यक्ति को क्षमा की गहरी जरूरत है, चाहे उन्हें इसकी जानकारी हो या नहीं। (रोमियों 3:23)
 - **परमेश्वर की क्षमा हमारे पाप की समस्या को बताती है:** हम चाहे जीवन में किसी भी बात को अपनी सबसे बड़ी समस्या मानें लेकिन हमारी पाप की समस्या सबसे बड़ी है। पाप ने परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को तोड़ दिया है और एक-दूसरे के साथ हमारे रिश्ते को बिगाड़ रहा है। केवल परमेश्वर की क्षमा ही हमारे पाप की समस्या को हल कर सकती है। (1 यूहन्ना 1:9)
 - **परमेश्वर की क्षमा हमारे अपराध बोध की समस्या को बताती है:** जब हमें हमारे पाप की जानकारी होती है तो हमारे अपराध बोध का बोझ आनन्द के साथ हमारे उद्देश्यों को पूरा करने से हमें रोक सकता है। परमेश्वर की क्षमा शान्ति लाती है, हमें अपराध बोध से मुक्त होकर जीने की अनुमति देती है। (रोमियों 5:1)
 - **परमेश्वर की क्षमा स्वतः नहीं मिलती है:** क्षमा अंगीकार और मन-फिराव के द्वारा उद्धार के पल मुप्त में मिलती है। लेकिन एक मसीही के लिए पाप के कारण परमेश्वर के साथ संगति में रुकावट आती है, हालांकि हमारा उद्धार सुरक्षित है। सतत क्षमा और परमेश्वर के साथ संगति नियमित रूप से हमारे पापों के अंगीकार पर निर्भर है। (1 यूहन्ना 1:9)
 - **परमेश्वर की क्षमा अनन्त है:** यह क्षमा अल्पकालीन नहीं है और न ही यह केवल एक बार मिलती है। यह स्वयं परमेश्वर के समान ही अनन्त है। (यूहन्ना 5:24; प्रेरितों 2:38)



- **परमेश्वर की क्षमा हमारे अतीत के लिए है:** जब हम हमारे अतीत के पापों के लिए क्षमा माँगते हैं तो परमेश्वर की क्षमा उन सारे कार्यों पर लागू होती है जिन्हें हमने किया है। (मीका 7:19)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे वर्तमान के लिए है:** जब हम पाप करते हैं तो हम जानते हैं कि हम तुरन्त ही परमेश्वर से क्षमा माँग सकते हैं क्योंकि यीशु मसीह ने दण्ड चुका दिया है। (1 यूहन्ना 2:1-2)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे भविष्य के लिए है:** हमें पाप से बचना चाहिए लेकिन फिर भी भविष्य में ऐसे समय आएँगे जब हमें परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा की जरूरत पड़ेगी। हम यह भरोसा कर सकते हैं कि यदि हम क्षमा माँगते हैं तो परमेश्वर हमें क्षमा करेगा। (इब्रानियों 7:25)
- **परमेश्वर की क्षमा पर भरोसा किया जा सकता है:** हम परमेश्वर की क्षमा पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि हम उसके चरित्र पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर कभी बदलता नहीं है इसलिए जब वह हमें क्षमा करता है तो हमारा छुटकारा निश्चित है। यह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर आधारित है और कुछ भी उसे रोक नहीं सकता है! (इब्रानियों 9:11-12)
- आप हमारे लिए परमेश्वर की क्षमा को संक्षेप में कैसे बताएँगे?

❖ **जैसे हमें क्षमा किया गया है वैसे ही दूसरों को क्षमा करना:** हम यह देख चुके हैं कि परमेश्वर हम से चाहता है कि हम दूसरों को क्षमा करें और वह मुफ्त में हमें क्षमा करता है। अब यह जाँचने का समय है कि ये दोनों कैसे एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

- **मत्ती 18:21-35 पढ़ें।** पतरस ने सोचा कि वह प्रेम और क्षमा के बारे में यीशु की शिक्षा को समझ गया था। रब्बियों की शिक्षा सिखाती थी कि एक व्यक्ति को अपने अपराधी को तीन बार क्षमा करना चाहिए। पतरस ने सोचा कि सात बार क्षमा करना उदारता दिखाना होगा।
- पतरस के सवाल के जवाब में यीशु ने क्या कहा?

- यीशु की कहानी में कौन क्षमा को हल्के में ले रहा था? उसने आभार की कमी को कैसे प्रकट किया?

- इस कहानी से हम क्या सबक सीख सकते हैं? हम किस प्रकार उस दास के समान हैं जिसका कर्ज माफ कर दिया गया है?



❖ **क्षमा कठिन क्यों है:** हालांकि हम जानते हैं कि हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिए लेकिन उसे करना हमारे लिए बहुत कठिन हो सकता है और उसमें समय लग सकता है। कुछ अपराधों को याद करना बहुत ही पीड़ाजनक होता है। हमें क्षमा की रूकावटों को जानने की जरूरत है जो हमारे रास्ते में आ सकती हैं। कुछ संभावित कठिनाईयाँ इस प्रकार हैं जिनका हमें सामना करना पड़ सकता है।

➤ यह चिन्ता कि गलती करने वाला अपने कामों के फल को भुगतने से बच जाएगा या उसे दण्ड नहीं मिलेगा

- क्षमा करना व्यक्ति को उसके कामों के स्वाभाविक परिणामों से मुक्त करना नहीं है बल्कि इसका अर्थ उसे अपने न्याय से मुक्त कर के परमेश्वर के हाथों में सौंपना है। परमेश्वर हमें सिखाता है कि बदला लेना हमारा काम नहीं है क्योंकि हम सब पापी हैं। परमेश्वर सिद्ध है और हमें न्याय करने और अपनी इच्छानुसार परिणाम और दण्ड देने का काम परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। हमें भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर आवश्यक दण्ड देने के लिए बुद्धिमान, न्यायी और प्रेमी है।

- रोमियों 12:19; इब्रानियों 10:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15

➤ यह चिन्ता कि हमें झूठ बोलना और यह दिखावा करना पड़ेगा कि हमें गहरी चोट नहीं पहुँची थी

- क्षमा माँगना और मेल-मिलाप करना जरूरी है क्योंकि हमें चोट पहुँची और/या हमारा रिश्ता टूट गया था। जब हम यह चर्चा करते हैं कि हमें कैसे चोट पहुँची और अपराधी मन फिराता है तो हमें क्षमा करना चाहिए। यह दिखावा करना सत्य नहीं है कि हमें कोई चोट नहीं पहुँची या कोई अपराध नहीं किया गया।

- लूका 17:3-4

➤ यह चिन्ता कि क्षमा करना लगातार पाप करने की अनुमति देना है

- जब हम किसी को उसके अपराध से मुक्त करते हैं या उसके काम के कारण हमारे बदला लेने के अधिकार को छोड़ते हैं तो हमें पाप की गंभीरता या उसके प्रभाव का खण्डन करने से सावधान रहना चाहिए। क्षमा का मतलब यह कहना नहीं है कि जो हुआ वह स्वीकार्य है बल्कि यह हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले गुस्से के चक्र को रोकने का निर्णय लेना है। क्षमा करने के लिए हिम्मत और चरित्र की जरूरत पड़ती है और क्षमा पाप की अनुमति देने की बजाय भलाई का साथ देती है। हमें दूसरों के पापी व्यवहार की पहचान करनी चाहिए, सामना करना चाहिए और उन्हें जिम्मेदार ठहराना चाहिए।

- मत्ती 18:15-17

➤ यह चिन्ता कि क्षमा करने से हमें दोबारा चोट पहुँच सकती है:

- यीशु ने सिखाया कि क्षमा ताकतवर है। लेकिन एक ऐसे व्यक्ति को फिर से हमारे जीवन में अनुमति देना कठिन हो सकता है जिसने कभी हमें चोट पहुँचाई हो। स्वयं को उस स्थिति में लाने के लिए अनुग्रह के कार्य की जरूरत है जहाँ हमें फिर से चोट पहुँच सकती है। यदि हम अपराधी को क्षमा कर देते हैं लेकिन वे मन नहीं फिराते हैं तो हमें



उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंपना चाहिए। लेकिन जब कोई हम से क्षमा माँगता है तो हमें उसे क्षमा करना चाहिए।

○ मत्ती 5:38-42

❖ **हम क्षमा क्यों करते हैं?** परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अपनी भावनाओं के गुलाम बन जाएँ। जब हम अपने बैर, नफरत और दुश्मनी को छोड़ते हैं तो हम दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर के रिश्ते में उनकी सहायता करने के लिए मुक्त हो जाते हैं। हम हमारे जीवनों में आगे बढ़ सकते हैं और आजादी में जी सकते हैं। क्षमा टूटे हुए रिश्तों को जोड़ती है और भावनात्मक बन्धन में पड़े हुएों को आजाद करती है। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की सर्वोत्तम योजना यह है कि हम गुस्से और दूसरों के प्रति नफरत से मुक्त जीवन व्यतीत करें।

- इस अध्याय में आपने जो सीखा है उसके आधार पर— किन कारणों से हमारे लिए दूसरों को माफ करना जरूरी है?

- सोचें कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे क्षमा करने के लिए आपको कुछ करने की जरूरत है या जिससे आपको क्षमा माँगने की जरूरत है।

सारांश

- ❖ क्षमा हमें चोट पहुँचाने के कारण दूसरों को चोट पहुँचाने के हमारे अधिकार को छोड़ने का कार्य है। इसका अर्थ उन्हें कर्ज से मुक्त करना है, रिश्ते को जोड़ना है, और इसके लिए हमारे व्यवहार में बदलाव जरूरी है।
- ❖ जब हम मन फिराते हैं तो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है। हम भरोसा रख सकते हैं कि एक बार मन फिराने और क्षमा माँगने के बाद परमेश्वर हमें हमारे पापों का जिम्मेदार नहीं ठहराएगा और परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता फिर से जोड़ा जा सकता है।
- ❖ जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है वैसे ही हमें भी दूसरों को क्षमा करना है।
- ❖ दूसरों को क्षमा करना बहुत से कारणों से कठिन है और क्षमा माँगते समय हमें हमारी हिचकिचाहट को समझना चाहिए और उन पर बात करनी चाहिए।



विचार के लिए प्रश्न

1.

बहुत से ऐसे मुद्दे हैं जो किसी दूसरे व्यक्ति को क्षमा करना कठिन बना सकते हैं। आप किसी ऐसे व्यक्ति से क्या कहेंगे जो आप से यह पूछता है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे क्षमा करे जो:

- मर गया है?
- आपको फिर से चोट पहुँचा सकता है?
- आपके भरोसे को तोड़ चुका है?
- जो आप से बात नहीं करना चाहता?
- अपने व्यवहार से बिल्कुल भी खेदित नहीं है?

2.

जब हमें चोट पहुँचती है या हमारे साथ गलत व्यवहार होता है तो हमारा स्वाभाविक जवाब अपना बचाव करना होता है। कई बार हम दूसरों के अतीत के पापों का हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं – चोट पहुँचाने या अपने आप को नए रिश्तों से दूर कर भविष्य में स्वयं को चोट से बचाने के लिए बार-बार उन्हें बीच में ले आते हैं। ये दोनों व्यवहार हानिकारक हो सकते हैं। एक साथ मिलकर भजन 91 पढ़ें। बताए गए खतरों और परमेश्वर द्वारा हमारा रक्षक बनने के वायदे के तरीकों की एक सूची बनाइए।